ओउम्

वेद प्रचार समिति, देहरादून

सम्पर्कः 196 चुक्खवूाला
देहरादून-248001
फोनः 9412985121
दिनांकः 10 मई, 2014

गायत्री मन्त्र का जाप करने से बुद्धि को बड़ी शक्ति प्राप्त होती हैः आचार्य विद्यादेव

देहरादून 10 मई। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का अर्धवार्षिक समारोह 7 मई से आरम्भ हुआ है जिसका समापन रविवार 11 मई, 2014 को वृहत यज्ञ की पूर्णाहुति से होगा। यज्ञ में देहरादून से अन्य स्थानों के श्रद्धालु भक्तजन बड़ी संख्या में पधारे हुए हैं। आज प्रातः समारोह के चौथे दिन प्रातः वृहतयज्ञ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व व अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ के पश्चात आर्य जगत के विख्यात भजनोपदेशक श्री रूहेल सिह आर्य के भजन हुए। आपने तीन भजन प्रस्तुत किए जिनके बोल थे - **'हां, प्रभु में गुण हैं इतने जो गिनायें जा सकते नहीं। करोड़ों जन्म लेकर भी बताये जा नहीं सकते।'** दूसरा भजन था - **'हम न भूलें हैं, न भूलेंगे शिवरात्रि की वह रात, मूलशंकर के मचलते हुए जजबात की रात'** और तीसरा था, **'तेरी कुदरत पे बलिहार, बेरी कुदरत पे बलिहार।'**

भजन के पश्चात महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा के जन्मभूमि न्यास से पधारे आचार्य विद्यादेव ने गायत्री मन्त्र की महिमा पर प्रवचन किया। कार्यक्रम में उपस्थिति तपोवन आश्रम के स्कूल के बच्चों को सम्बोधित कर आपने कहा कि आज वह कोशिश करेगें कि बच्चों के मन में गुरूमन्त्र की महिमा को स्थापित कर सकें। आपने अपने प्रवचन के आरम्भ में शास्त्रों में वर्णित राजा जनक व ऋषि बुडित की कथा का वर्णन किया और कहा कि राजा जनक ने उनसे कहा कि आपको गायत्री मन्त्र का ज्ञान है तो फिर आप हाथी की तरह संसार के भार को क्यों ढो रहे हो। इस पर बुडित ने कहा कि मैंने गायत्री मन्त्र के शरीर को ही जाना है, आत्मा को अभी नहीं जान सके हैं। उन्होंने कहा कि बुडित ऋषि पुत्र थे व स्वयं भी ऋषि थे। विद्वान वक्ता ने कहा कि गायत्री मंत्र के पूर्ण रहस्य को जानना बहुत दूर की बात है। हमें कोशिश करनी चाहिये कि हम जितना जान सकें, उतना गायत्री मन्त्र के रहस्य व महिमा को जानना चाहिये। उन्होंने बताया कि अग्नि गायत्री मन्त्र का मुख है। अग्नि वह पदार्थ है जो अन्य पदार्थों को इसमें डालने पर भस्म कर देती है। गायत्री मन्त्र का अर्थपूर्वक जप करने से यह जन्म-जन्मान्तर की पाप वासनाओं को दग्ध व नष्ट कर देती है जिससे शुद्ध व पवित्र जीवन आरम्भ होता है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक वेद मन्त्र का एक ऋषि होता है। गायत्री मन्त्र का ऋषि गाथिर विश्वामित्र है। विश्वामित्र का अर्थ है कि ऐसा व्यक्ति जो सबका मित्र है। आचार्य विद्यादेव ने कहा कि जहां वेद पढ़ायें जाते हैं उस स्थान को गायत्री कहते हैं।

आर्य समाज के विद्वान आचार्य विद्यादेव ने कहा कि गाथिर विश्वामित्र का अर्थ ब्रह्मचारी होता है और ब्रह्मचारी उसे कहते हैं जो वेदाध्ययन का व्रत लेता है या अपना स्वभाव वेदाध्ययन करने का बनाता है। उन्होंने कहा कि गले में पड़ा हुआ यज्ञोपवीत वेदविद्या का चिन्ह है जिससे पता चलता है कि यह व्यक्ति ब्रह्मविद्या का अध्येता है। श्रावणी पर्व से वेदाध्ययन किया जाता है। प्रत्येक श्रावणी को पुराना यज्ञोपवीत त्याग कर नया यज्ञोपवीत धारण किया जाता है जिसका तात्पर्य यह होता है कि पुनः नये संकल्प व उत्साह से वेदाध्ययन किया जाये। श्री विद्यादेव ने कहा कि गुरू ब्रह्मचारी को गुरूमन्त्र गायत्री मन्त्र का उपदेश कर उसे ब्रह्म विद्या का विद्यार्थी व अधिकारी बनाता है। उन्होंने यह भी कहा कि चारों वेदों का अध्ययन करने तक विद्यार्थी ब्रह्मचारी बना रहता है।

आर्य समाज के विद्वान श्री विद्यादेव ने आगे कहा कि गायत्री मन्त्र से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तीनों एक साथ होती हैं। इस पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला। अपने प्रवचन को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र से ईश्वर की अनुभूति करने का प्रयास कीजिए, गायत्री का जाप कीजिए, इससे आप को बहुत बड़ी शक्ति मिलेगी। कार्यक्रम का संचलान कर रहे श्री उत्तम मुनि ने कहा कि आचार्य अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को चाहता है, दुष्टाचारियों को नहीं चाहता। उन्होने आगे कहा कि राजा को राष्ट्र की रक्षा करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि ब्रह्मचर्य का पालन करने से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने सूचना दी कि आगामी 14 अक्तूबर, 2014 माह से 9 मार्च, 2015 के छः महीनों में गुरूकुल, मझांवली-हरयाणा में एक वृहत यज्ञ का आयोजन किया गया है। इसमें गायत्री मन्त्र से 1.25 करोड़ घृत व हव्य द्रव्यों से आहुतियां दी जायेगीं। आत्म कल्याण के इच्छुक लोग इसमें भाग लेकर अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकते हैं। आयोजन के अन्त में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने यज्ञ के यजमानों को वैदिक मन्त्रों से आशीर्वाद दिया।

कल दिनांक **11 मई, 2014 को प्रातः 6:30 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक हवन से कार्यक्रम आरम्भ होगा।** हवन के बाद **अग्निहोत्र धर्मार्थ टस्ट्र, दिल्ली** की ओर से **11-हवां स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती स्मृति दिवस** मनाया जायेगा। **कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हीरो मोटर कार्पो. के चेयरमैन श्री बृजमोहन मुजांल होगें।** कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी श्रोताओं को आर्य जगत के विख्यात संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती आशीर्वाद प्रदान करेगें। ध्वाजारोहण श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री के द्वारा किया जायेगा अैर कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती करेगें। आयोजन में जहां विद्वानों के उच्च कोटि के प्रवचन होगें वहीं इसमें **श्री रविन्द्र मेहता, दिल्ली को उनकी आर्य जगत की सेवाओं के लिए महात्मा प्रभु आश्रित की स्मृति में ''वेद मित्र सम्मान'' प्रदान किया जायेगा। डा. सुन्दर लाल कथूरिया को स्वामी दीक्षानन्द जी की स्मृति में ''वेद श्री'' सम्मान प्रदान किया जा रहा है। पं. श्री रूहेल सिंह आर्य जी को माता शान्तिदेवी गणेशदास अग्निहोत्री जी की स्मृति में ''संगीत शिरोमणि सम्मान'' एवं श्री मति उषा नेगी को श्रीमति कृष्णा महेश रहेजा की स्मृति में ''आर्य श्रेष्ठी सम्मान'' प्रदान कर सम्मानित करने की योजना व कार्यक्रम है। कार्यक्रम में सभी को आमंत्रित किया गया है।**

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001